



डॉ. के. थंगराज पद्मश्री से सम्मानित

23 जून, 2026 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित सिविल इन्वेस्टिचर समारोह-II में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने प्रतिष्ठित आनुवंशिकी वैज्ञानिक डॉ. कुमारसामी थंगराज को पद्मश्री से सम्मानित किया। डॉ. थंगराज वर्तमान में हैदराबाद स्थित सीएसआईआर-कोशिकीय एवं आणविक जीवविज्ञान केन्द्र (सीएसआईआर-सीसीएमबी) में सीएसआईआर भटनागर फेलो के रूप में कार्यरत हैं।



(डॉ. कुमारसामी थंगराज माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी से पद्मश्री लेते हुए)

सीएसआईआर-सीसीएमबी में तीन दशकों से अधिक के अपने शोध कार्य के दौरान डॉ. थंगराज ने भारत की विभिन्न जनसंख्याओं की उत्पत्ति तथा उनके प्रवासन (माइग्रेशन) के इतिहास पर महत्वपूर्ण शोध किए हैं। भारत जैसे विविधताओं से परिपूर्ण देश में, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की शारीरिक बनावट, रहन-सहन और सांस्कृतिक परंपराएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं, वहाँ इस विविधता के मूल स्रोतों को समझने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

अपने विस्तृत आनुवंशिक विश्लेषणों के माध्यम से उन्होंने विभिन्न भारतीय समुदायों में पाए जाने वाले विशिष्ट आनुवंशिक संकेतकों (जेनेटिक सिग्नेचर) की पहचान की तथा उपमहाद्वीप की अन्य जनसंख्याओं में भी उनके संबंधों का पता लगाया। विभिन्न जनसमूहों में समान आनुवंशिक संकेतकों (जेनेटिक सिग्नेचर) का पाया जाना इस बात का संकेत है कि उनका आपस में आनुवंशिक संबंध है। उनके शोधों ने सिंधी, कूर्गी, लद्दाखी तथा निकोबारी समुदायों की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला है। साथ ही, उन्होंने रूपकुंड झील तथा प्राचीन मुज़िरिस पोर्ट सिटी से जुड़ी ऐतिहासिक लोककथाओं की गुत्थी को विज्ञान द्वारा सुलझाया। इन अध्ययनों से

यह भी सिद्ध हुआ है कि अफ्रीका, यूरोप तथा एशिया के विभिन्न भागों से लोग सदियों से भारतीय उपमहाद्वीप में आते रहे, यहाँ बसते रहे और स्थानीय समुदायों के साथ घुल-मिल गए। इस दीर्घकालीन आनुवंशिक एवं सांस्कृतिक समावेशन के परिणामस्वरूप यहाँ के लोगों में विविध शारीरिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का विकास हुआ।

डॉ. थंगराज ने विभिन्न भारतीय उप-जनसंख्याओं में अंतर्विवाह (एंडोगैमी) के कारण उत्पन्न होने वाले अनेक विशिष्ट रोगजनक आनुवंशिक उत्परिवर्तनों (म्यूटेशन) की भी पहचान की है। वे देश में दुर्लभ आनुवंशिक रोगों की शीघ्र पहचान एवं उपचार के लिए आनुवंशिक परीक्षणों को बढ़ावा देने के प्रबल समर्थक रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) की महत्त्वपूर्ण 'जीनोम इंडिया' पहल का नेतृत्व भी किया। इस पहल ने भारत की विभिन्न जनसंख्याओं की आनुवंशिक प्रोफाइल तैयार करने की दिशा में एक मजबूत आधार स्थापित किया है, जो भविष्य में देश में व्यक्तिनिष्ठ (पर्सनलाइज़्ड) चिकित्सा को विकसित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस अवसर पर सीएसआईआर-सीसीएमबी के निदेशक डॉ. विनय के. नंदीकूरी ने कहा कि -"डॉ. थंगराज के उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायी शोध कार्य को आगे बढ़ाने का अवसर मिलना सीएसआईआर-सीसीएमबी के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। उनके अनुसंधान ने न केवल हमारे देश को अपने इतिहास को बेहतर ढंग से समझने में सहायता प्रदान की है, बल्कि भविष्य की स्वास्थ्य सेवाओं की दिशा भी निर्धारित की है।"